RNI No - RAJHIN/2003/9899 Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 August 2018 Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd August 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : चौथा | अगस्त–2018

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
ग्रहणशीलता 5

17 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले
भजन–अभ्यास

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
प्रेमी सुनों प्रेम की बात 19
(स्वामी जी महाराज की बानी) दिल्ली

34 16 पी.एस. रायसिंहनगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 & 98 71 50 19 99
विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक–नन्दनी, **सहयोग**–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पॉलीकम ऑफसैट, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 197 Website : www.ajaibbani.org

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

ग्रहणशीलता

गुरु हर साँस के साथ आपको याद करता है, गुरु की याद के बिना सेवक में गुरु के लिए प्यार पैदा नहीं हो सकता। गुरु प्यार की किरणें भेजता है और सेवक गुरु के प्रति एक मजबूत खिंचाव महसूस करता है; यह भी एक बख्शिश है। अगर सेवक अपना ध्यान गुरु पर न भी लगाए तो भी गुरु की किरणें निकलती रहती हैं उसी के असर से सेवक का निर्माण होता है अगर सेवक **ग्रहणशील** बनता है तो गुरु उसके सामने प्रकट होता है।

ग्रहणशीलता तभी बनती है जब बाहर के सभी ख्याल निकाल दिए जाएं सिर्फ आप रहें और आपका गुरु रहे। आँखें आत्मा की खिड़कियां हैं और गुरु आँखों के जरिए बिना किसी भाषा के आपको शिक्षा देता है। जो ग्रहणशील हैं उनका जीवन सभी अच्छाईयों का घर बन जाएगा।

दयाल गुरु पावर, सदा नामलेवा के साथ रहता है और उसका सबसे नजदीकी साथी है। वह आपकी अंतरी प्रार्थनाएं और भक्ति से पूरी तरह वाकिफ है। गुरु जिसका हाथ थाम लेता है उसे हमेशा थामें रखता है, उसे मजबूत पकड़ को ढीला करने का कभी ख्याल भी नहीं आता। इस संसार के अंत तक गुरु पावर कभी भी शिष्य को न भूलेगी और न ही छोड़ेगी।

वह प्यार का अभेद समुंद्र है। प्यार सिर्फ देना जानता है वह सिर्फ देता है देता ही रहता है। गुरु लगातार शिष्यों को अपनी दया भेजता रहता है। जब शिष्य गुरु की अंदरूनी शान को देखता है

और मधुर संगीत की तान सुनता है तो उसे उसका जवाब देना चाहिए अनजान लोग चाहे जो भी कहें, यह गुरु की बख्शिश है।

जब गुरु किसी को नामदान देता है वह उसमें रहने लगता है उसके सभी कर्मों को देखता है और जहाँ जरूरत होती है वहाँ उसे दिशा-निर्देश देता है, खासकर उन्हें जो अपना मुख गुरु की तरफ रखते हैं। आप भूलते हैं लेकिन गुरु नहीं भूलता। उसे हर तजुर्बे में मौजूद देखें और याद रखें कि वह हमेशा आपके साथ है। आप जब भी अपना ख्याल उसकी तरफ करते हैं वह मदद के लिए तैयार है।

मैं चंद शब्द उन अनेक व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में कहना चाहूंगा जो प्रेमी अपनी परेशानियों के समाधान के लिए मुझसे पूछते हैं। मुझे उन्हें सही दिशा देने में खुशी होती है वहाँ यह भी याद रखा जाना चाहिए कि मैंने जिन्हें नामदान दिया है उनकी संभाल वह दयाल गुरु पावर खुद करती है। वह दयाल पावर हम सबके ऊपर काम कर रही है, हमेशा अपने बच्चों के साथ है।

अगर शिष्य अपने आपको ग्रहणशील अवस्था में रखे तो दयाल गुरु पावर उसकी सभी समस्याओं को हल कर सकती है। **ग्रहणशीलता** एक ऐसी चाबी है जोकि न सिर्फ आपकी भौतिक परेशानियां दूर कर सकती है बल्कि आपके अंदर जो स्वर्ग की बादशाहत है उसे भी खोल सकती है।

सतगुरु का शब्द ताजा जख्मों को राहत देने वाली मरहम के समान है। सच तो यह है कि तवज्जो में बहुत ताकत होती है। जब कोई अपने आपको असहाय महसूस करता है कि कोई उम्मीद नहीं बची तो उसे गुरु की तरफ मुख करने से पूरी संभाल और सहायता मिलती है।

आप जब कभी अपने आपको अकेला और खोया हुआ महसूस करें तो मधुरता से गुरु को याद करें उनसे मदद की गुहार लगाएं अगर आप उस समय अभ्यास में बैठ सकते हैं तो प्यार और श्रद्धा से बैठें। परमात्मा की तरफ सच्चा रास्ता तभी शुरू होता है जब आप शरीर के अहसास से ऊपर उठते हैं।

मैंने आपके लिए एक मित्र खोज लिया है। वह मित्र सब्र से आपका अपनी तरफ मुड़ने का इंतजार कर रहा है। वह लगातार आपको प्यार करते हुए आपके साथ है। वह आपके साथ अपना जीवन साँझा करना चाहता है। आपका प्यार चाहता है, आपके ख्याल और आपकी श्रद्धा चाहता है। यह तो आप हैं जिसने अलग-अलग ख्यालों का एक मोटा पर्दा अपने और अपने मित्र के बीच तान रखा है, इस पर्दे को दूर करने की कोशिश करें तब आप देखेंगे कि आपका मित्र बाँहें फैलाकर इस जीवन और इसके बाद भी प्यार से आपको गले लगाने के लिए आपका इंतजार कर रहा है।

आप न उम्मीद न हों वह आपको बहुत प्यार करता है। आप सिर्फ अपने नकारात्मक रवैये को छोड़ दें और **ग्रहणशील** बन जाएं सब कुछ आपका हो जाएगा। अगर हम अपना मुख उसकी तरफ मोड़ दें वह हमेशा आपके साथ है और मुनासिब मदद कर रहा है।

गुरु पावर हमेशा अपने शिष्यों की मदद और संभाल करती है। वह हर तरह से बाहरी और अंतरी तरीके से अपने शिष्यों के आराम का ध्यान रखती है। यहाँ तक कि पिछले कर्मों के प्रभावों को भी सूली का सूल बनाकर राहत देती है। जैसे माँ अपने बच्चों के लिए सब कुछ कुर्बान कर देती है उसी तरह गुरु भी अपने बच्चों के लिए सब कुछ कुर्बान कर देता है। असल में शिष्य तो ख्वाब में भी नहीं सोच सकता कि गुरु ने उसके लिए क्या किया है?

गुरु अपने शिष्यों में अपने ख्याल अपने जीवन का असर भर देता है। जब हम गुरु को याद करते हैं तो वह हमें अपने पूरे दिल और आत्मा से याद करता है। गुरु शरीर नहीं है वह शब्द स्वरूप देहधारी शब्द है। गुरु पावर का पूरा फायदा लेने के लिए शिष्य को **ग्रहणशीलता** बनानी बहुत जरूरी है। गुरु की हिदायतों को हुक्म की तरह सख्ती से पालन करें। जब आप गुरु की हिदायतों को मानना शुरू कर देते हैं तो यह एक संकेत है कि आप गुरु के प्यार में आगे बढ़ रहे हैं। आप गुरु के प्यार में जितना आगे बढ़ेंगे आपकी ग्रहणशीलता उतनी और बढ़ेगी।

जब आप **ग्रहणशीलता** बढ़ाना शुरू करेंगे आपके सभी कष्ट दूर हो जाएंगे, आप पक्के विश्वास के साथ इस रास्ते पर आगे बढ़ेंगे। संगत में गुरु आपको हर कदम पर अपनी ताकत और महानता दिखाएगा जब तक आप यह न जान जाएं कि परमात्मा खुद आपका रहनुमा और गुरु है। वह आपको तब तक नहीं छोड़गा जब तक आपको सुरक्षित उस पिता के सच्चे घर न पहुँचा दे।

जितना ज्यादा समय गुरु से सीधा संपर्क हो उतना बेहतर है क्योंकि 24 घंटे संपर्क होना मुमकिन नहीं है। आप अपने घर में अपने कमरे में बैठकर **ग्रहणशीलता** विकसित करें, जब ग्रहणशीलता बन गई तो आप कहीं भी जाएं वह हमेशा रहेगी। शब्द हर जगह मौजूद है वह पूरी कायनात में गूँज रहा है खासकर देहधारी शब्द में ज्यादा है उसकी एक गूँज पूरी कायनात को हिला देती है सिर्फ उसके प्रति ग्रहणशील बनने का सवाल है और कुछ नहीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इंसान यहाँ बैठा है या वहाँ बैठा है।

यह उस शब्द को ध्यान करने का मामला है जो हर जगह व्याप्त है। जहाँ शब्द प्रकट है शब्द गूँजता है तो शब्द की गूँज पूरे

संसार मे जाती है। समझें! गुरु असल में क्या है? सभी ग्रंथों में ऐसे गुरुओं का जिक्र है। आप जब ऐसी जगह जाते हैं जहाँ गुरु बैठा है तब आपको सब कुछ भूल जाना चाहिए। आप अपने आसपास के वातावरण को भूल जाएं और यह भी भूल जाएं कि आपके साथ कौन बैठा है। आप अपना ध्यान गुरु की आँखों पर लगाएं जहाँ पर गुरु की आत्मा का खेल हो रहा है।

गुरु की संगत का पूरा फायदा लेने के लिए ग्रहणशील बनना बहुत जरूरी है। जो लोग गुरु के नजदीक तो आ जाते हैं लेकिन उनका मन उस जगह से उछलता रहता है उनके मन के तालाब में लगातार लहरें उठती रहती हैं ऐसे लोग **ग्रहणशीलता** नहीं बना सकते। ऐसे लोग गुरु के शरीर खासकर उसकी आँखो से निकलती हुई किरणों से फायदा नहीं उठा सकते।

आप यह फायदा हजारों मील दूर बैठकर भी उठा सकते हैं। आप रेडियो के जरिए सुन सकते हैं कि दूर बैठा इंसान क्या बोल रहा है? आप टेलिविजन के जरिए देख सकते हैं कि कौन बोल रहा है? शब्द हर जगह व्याप्त है। नाम और शब्द सब एक ही हैं लेकिन जिस इंसान में शब्द प्रगट है उसकी गूँज पूरे संसार में गूँजती है। जो लोग अपने मन व बुद्धि को स्थिर करके ग्रहणशील बन जाते हैं वे पूरा फायदा उठा लेते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर गुरु हजारों मील दूर समुंद्र पार रहता हो और शिष्य इस पार रहता हो तो शिष्य को अपना ध्यान गुरु की ओर करना चाहिए।'' शब्द हर जगह है आपने सिर्फ ग्रहणशील बनना है। आप जब ग्रहणशील बनेंगे तब आप सतसंग का पूरा फायदा उठा सकेंगे।

मैं आपको एक बहुत ही नाजुक विषय के बारे में बता रहा हूँ। हो सकता है आपने कई वर्ष गुरु के साथ बिताए हों लेकिन अभी तक जीवन नहीं बना। आप जैसा सोचते हैं आप वैसे ही बन जाते हैं अगर आप ग्रहणशील बन जाते हैं तो गुरु वाला जीवन आपके जीवन में रच जाता है; आप एक बन जाते हैं दो नहीं रहते।

सेंटपाल कहते हैं, ''अब मैं नहीं बल्कि क्राईस्ट मुझमें रहता है।'' तकरीबन सभी महात्माओं ने चाहे वे भारत में हुए या बाहरी मुल्कों में हुए यही कहा है। मौलाना रूम कहते हैं, ''मेरा अंतर गुरु से इतना भर गया है कि मैं यह भी भूल गया हूँ कि मेरा नाम क्या है? मैं यह भी नहीं समझ पा रहा कि वह मुझमें है या मैं उसमें हूँ।'' यह उनके भाग्य में आता है जो ग्रहणशील बन जाते हैं।

परमात्मा संपूर्ण ज्ञान, दया, रहम और प्यार है। ये सभी गुण बातों से नहीं बल्कि ग्रहणशील बनकर आपमें विकसित हो सकते हैं। आप बातों से बुद्धि के स्तर पर समझ सकते हैं लेकिन जब तक आप ग्रहणशील नहीं बनेंगे तब तक आपमें गुरु वाला जीवन नहीं रच सकता। आप मेरा मतलब समझ रहे हैं?

गुरु पावर सदा आपके साथ है, मुनासिब प्यार और सुरक्षा प्रदान करते हुए आपके ऊपर काम कर रही है। प्यारा पिता कभी नहीं चाहेगा कि उसका बच्चा सदा पालने में पड़ा रहे। वह बच्चे को खड़े होकर चलते हुए देखकर खुश होगा, वह अपना हाथ बच्चे को खड़े होकर चलने की कोशिश में जरूर पेश करेगा।

रास्ता बहुत लम्बा है लेकिन गुरु हर व्यक्ति को समय देता है उसके दिल में हर एक के लिए बहुत प्यार है बेशक ऊपर की ओर ले जाने वाली रोशनी को प्राप्त करने की क्षमता बढ़ाना हमेशा

आसान न भी हो लेकिन गुरु अपने ज्ञान में बहुत सब्र वाला होता है और अपनी विशाल रूहानियत के खजाने में से उसकी सहायता हमें तब तक उपलब्ध रहती है जब तक हम सचखंड जाकर गुरु के साथ न जुड़ जाएं।

मनुष्य को कोई विशेष बल नहीं लगाना, उसे अपने आपको नम्रता और ईमानदारी से गुरु प्यार की चरम सीमा तक नैतिक और सदाचार जीवन में ढालना है। जो **ग्रहणशीलता** की आवश्यक अवस्था पैदा करेगी, बाकी सब कुछ गुरु के हाथ में है।

कृपया उस दया के प्रति ज्यादा ग्रहणशील होने में नाकामयाबी के लिए शोक न करें। धीरे-धीरे और लगातार चलने वाला दौड़ में जीत जाता है। परमात्मा की मौज में खुशबूदार फूल बहुत ही नाजुक तरह से पनप जाते हैं।

जब शब्द धुन तेज हो तो वह आपको याद दिलाती है कि गुरु हमेशा आपके साथ है, आपके सिर के ऊपर है; आप पर दया कर रहा है अपना मुख उसकी ओर करके उससे लाभ प्राप्त करें। आप इस बात से सहमत होंगे कि प्यार से की गई भक्ति और आत्मा की तड़पती हुई पुकार गुरु के रहम को जगाती है और शिष्य उससे एक तार हो जाता है।

आपको प्यार करने की कला वही सिखा सकता है जो प्यार का स्वरूप है और जो परमात्मा और समस्त रचना के नशीले प्यार में ओतप्रोत है। इस संसार में परमात्मा का प्यार और शब्द स्वरूप देह के प्यार से बढ़कर कोई प्यार नहीं है। जो परमात्मा के बारे में सोचता है परमात्मा के बारे में पढ़ता है परमात्मा के बारे में बात करता है और परमात्मा का भजन करता है वह परमात्मा की तरह ही बन जाता है। आपके और आपके गुरु के बीच में कोई भी खड़ा नहीं होना चाहिए।

आप अपने आपको जितना ज्यादा पूर्ण समर्पित कर देंगे आप उतना ज्यादा प्राप्त करेंगे। कितना अदभुत है उसके आगे पूरी तरह से समर्पण करना, उसकी प्रेम भरी मौजूदगी और दया को जीवन के हर मोड़ पर महसूस करना कि वह करनहार है प्यारा है। उसकी हिदायतों को मानते हुए कोई जितनी ग्रहणशीलता विकसित करेगा उतना ही वह गुरु की दया को महसूस करेगा उसे कायम रखेगा और उसका आनंद ले सकेगा। गुरु की दया अनंत है।

जब कहीं शब्द प्रगट होता है और आप उसके प्रति ग्रहणशील हो जाते हैं तो आपका मन स्थिर हो जाएगा। आप अपने आपको उसमें देख सकते हैं और अपने अंतर में परमात्मा को देख सकते हैं। आपके और परमात्मा के दरमियान आपका मन खड़ा है बाहर

से कुछ नहीं लाना। जब मन की अस्थिर तरंगे शांत होती हैं तब आप उसमें अपना असली चेहरा देख सकते हैं। आप सिर्फ प्यार से ग्रहणशील बन सकते हैं। जिस इंसान में गुरु के लिए प्यार है वह हजारों लोगों के साथ बैठा हुआ भी अकेला है क्योंकि उसकी पूरी तवज्जो अपने गुरु पर लगी हुई है। इस तरह से आप **ग्रहणशीलता** विकसित कर सकते हैं।

शिष्य का ध्यान गुरु की ओर होना चाहिए। ध्यान की गति बहुत तेज है। बिजली की ताकत से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि प्राण या जीवन की धारा बिजली के करंट से ज्यादा तेज है और ध्यान प्राणों से ज्यादा तेज है।

टेलेपथी से यह साबित हो गया है कि किस तरह से दो लोगों के बीच दिल की तारें एक लय में खेलती हैं चाहे उनके बीच कितना भी फासला क्यों न हो! ख्यालों की गूँज और उसका दायरा असीमित है। गुरु और शिष्यों की हमदर्दी भरी तारें प्यार के बे-आवाज संदेश एक दूसरे तक उस ताकत से पहुँचाते हैं जो हम सोच भी नहीं सकते। परमात्मा के साथ हम ऐसा अदभुत रिश्ता बना सकते हैं। उस अनंत परमात्मा के साथ एकतार होकर हम ख्यालों की ताकत से संसार का भला कर सकते हैं।

जब शिष्य गुरु को याद करता है तो शिष्य अपने अंतर में एक किस्म के खुदाई नशे का अनुभव करता है। इसे टेलेपथी या दिल से दिल तक होने वाला वार्तालाप कहते हैं। इसी तरह से हम अपनी तवज्जो को उस अनंत परमात्मा के साथ एक लय करके ओरों का बहुत भला कर सकते हैं। इसके लिए हमें उस खुदाई जमीन जिसमें सभी स्थापित हैं उससे जुड़ना होगा और वहाँ से यह खुदाई दया उस व्यक्ति या उन समाजों तक पहुँचाना होगा जो इसका फायदा

उठाना चाहते हैं। इसमें हमें उनकी ख्वाहिशें उस परमात्मा के आगे पेश नहीं करनी है बल्कि परमात्मा की प्यार भरी खुशी को जगाना है और वांछित फल की प्राप्ति के लिए उसकी दया की प्रतिक्षा करनी है।

हमने रहनुमाई के लिए सदा ही अपने गुरु की तरफ देखना है क्योंकि कोई और रहनुमाई नहीं कर सकता इसलिए जरूरी है कि हम लगातार उससे जुड़े रहें, उसके प्रति सदैव वफादार रहें और अपने और गुरु के बीच किसी को न आने दें। सभी सतसंगी भाई-बहनों को जीवन के इस ऊँचे मकसद की प्राप्ति के लिए प्यार से मिलकर काम करना चाहिए। किसी भी तरह से किसी और व्यक्ति को भी ध्यान भंग नहीं करने देना चाहिए।

पूर्ण प्यार से हुक्मों का पालन करने से वह रहमत का समुंद्र अंतर में जोश मारता है और वह दयालु गुरु अपनी रहमत भरी सुरक्षा और मदद अपने शिष्य को समय-समय पर देता है, चाहे शिष्य को इसका अहसास हो या न हो।

एक सतसंगी होते हैं और एक करीबी सतसंगी होते हैं। करीबी सतसंगियों से मेरा मतलब वह जो गुरु के करीबी संपर्क में आए हैं। सभी बच्चों के लिए शिक्षा एक समान है लेकिन जो ग्रहणशील बनते हैं वह गुरु के करीब आ जाते हैं उन्हें खास सुरक्षा मिलती है हाँलाकि गुरु की सुरक्षा सभी तक पहुँचती है सभी को एक जैसी रोटी दी जाती है लेकिन जो बच्चा ज्यादा भूखा है उसे ज्यादा खाना मिलता है।

जीवन के संसारी या रूहानी पहलू में कामयाबी के लिए **ग्रहणशीलता** बहुत जरूरी है। इसे सही समझ के जरिए ही प्राप्त

किया जा सकता है। सबसे पहले - परमात्मा की तरह जीवन जीना। दूसरा-ठीक ढंग से रूहानी डायरी रखना और तीसरा-**ग्रहणशीलता** विकसित करना। अगर आप पहले दो में कामयाब हो गए तो तीसरा अपने आप आ जाएगा। रूहानियत सिखाई नहीं जा सकती इसे एक बीमारी की तरह पकड़ा जा सकता है और जो ग्रहणशील हैं उनमें फैलाई जा सकती है।

जब एक शिष्य गुरु के पास आता है तो वह अपनी विकसित **ग्रहणशीलता** की मात्रा के अनुसार गुरु के सर्वव्यापक असर को अनुभव करता है। जब कोई सन्तों की शिक्षा को समझ लेता है और इस मार्ग को अपना लेता है शुरूआत में अभ्यास में दिखने वाली चीजें उसे तजुर्बा लगती हैं लेकिन उसे पूरा विश्वास तब आता है जब वह अंतर में गुरु को देख लेता है। औरों के अनुभव हमें इस मार्ग पर आने में मदद कर सकते हैं लेकिन अपना खुद का अनुभव बेशक वह कितना भी छोटा क्यों न हो पूरा विश्वास दिलाता है।

नाम हर नामलेवा का सदा रहने वाला साथी है। जैसे-जैसे शिष्य अपने आपको जानने में तरक्की करेगा वैसे-वैसे वह गुरु पावर द्वारा दी गई प्यार भरी मदद की कद्र करेगा। जिन्हें इस मार्ग पर डाला गया है उनके जीवन में घटनाएं उनके ऊँचे दृष्टिकोण को जगाने के लिए घटती हैं। शिष्य गुरु पावर को उन सभी घटनाओं में काम करते हुए देखता है। उसके लिए बहती नदी में ग्रंथ और पत्थरों में धर्मोपदेश होता है।

गुरु अपने शिष्यों को अपने दिल के अंदरूनी हिस्से में रखता है आखिर शिष्य उसके बच्चे हैं। वह उनकी नालायकियों की ओर नहीं देखता वह उन्हें लायक बनाने के लिए आया है। वह उन्हें छोड़ नहीं सकता उसका प्यार बहुत महान है।

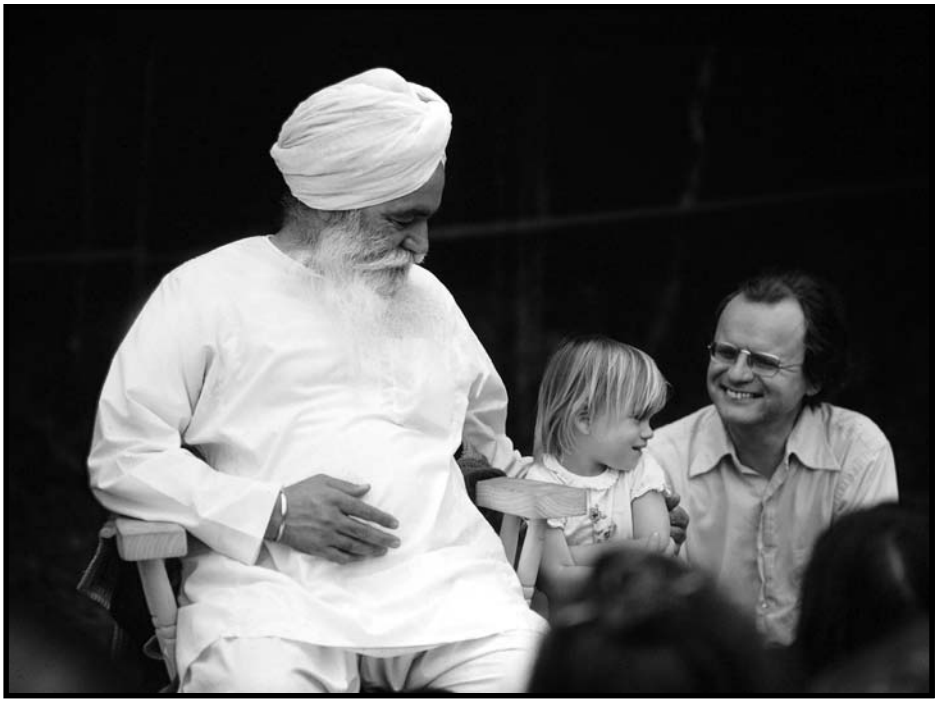

कृपया उसकी दया के प्रति ग्रहणशील बनना सीखें और उसकी दया भरी मौजूदगी महसूस करें। आपके साथ बस में सफर करते हुए, गलियों में आपसे बातें करते हुए, बगीचे में आपके साथ बैठे हुए, दफ्तर में आपके साथ आपके डेस्क पर बैठे हुए और आपके साथ हर रोज सुबह दफ्तर जाते हुए, रास्ते में तालाब के पास रूककर नए फूलों को देखते हुए और अमावस की शाम को आपके साथ वापिस आते हुए। गुरु हमेशा शिष्य के साथ रहता है और इस संसार के अंत तक उसे नहीं छोड़ता। पिता अपने बच्चों को कभी नहीं छोड़ता। परमात्मा की मौज में रहें:

मन्ने की गति कही ना जाए, जे को कहे पीछे पछताए।
कागद कलम ना लिखनहार, मन्ने का बह कारण विचार।
ऐसा नाम निरंजन होए, जे को मनि जाने मन कोए।।

***

भजन-अभ्यास

परमपिता सर्वशक्तिमान सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारे ऊपर असीम दया की और हमें अपनी भक्ति का दान दिया। इस भक्ति को हम खेतों में उगा नहीं सकते, बाजार से खरीद नहीं सकते।

इस भक्ति के कारण कोई धोखेबाज हमसे धोखा नहीं कर सकता। इस भक्ति को न हवा उड़ा सकती है, न अग्नि इसे जला सकती है और न चोर इसे चुरा सकता है। हम इस भक्ति को अपने सतगुरु की दया-मेहर से ही प्राप्त कर सकते हैं।

प्यारेयो! मैं आपके साथ भजन-अभ्यास में बैठकर अपार खुशी अनुभव कर रहा हूँ। यह उस पहलवान की तरह है जो बूढ़ा हो जाता है कुश्ती नहीं लड़ सकता फिर भी कसरत करना नहीं छोड़ता क्योंकि वह कसरत से प्यार करता है। इसी तरह व्यापारी चाहे कितना ही बूढ़ा हो जाए, चाहे उसके पास हजारों कर्मचारी काम करते हों फिर भी वह खुद व्यापार करना पसंद करता है क्योंकि ऐसा करने में उसे आनन्द आता है।

जो व्यक्ति नशे का आदी है चाहे वह बूढ़ा हो जाए और नशे के कारण उसका शरीर कमजोर हो जाए फिर भी वह नशे की लज्जत नहीं छोड़ना चाहता क्योंकि वह नशे का आदी है और नशा करना चाहता है; वह अपनी आदत को पूरी करने की कोशिश करता है। इसी तरह जिसे अंदर जाने में आनन्द प्राप्त हुआ हो जब उसे कोई ऐसा प्रेमी मिलता है तो वह उसके साथ भजन-अभ्यास करने का लाभ उठाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमली जीवै अमल खाए त्यों हरिजन जीवै नामु धिआए।

मैं आशा करता हूँ कि आपने यहाँ पर अभ्यास करके जो प्रेरणा और उत्साह प्राप्त किया है आप लोग इसे याद रखेंगे और इस पर चलेंगे। आपको यहाँ बताया गया है कि भजन-अभ्यास करना क्यों जरूरी है और भजन-अभ्यास में बैठने से पहले हमें क्या करना चाहिए?

आप भजन-अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह से याद कर लें। जब आप अभ्यास में बैठें तो मन को बता दें कि अब हम उसकी बात नहीं सुनेंगे क्योंकि अब हम बहुत जरूरी काम के लिए बैठ रहे हैं। आप अपना ध्यान बाहरी चीज़ो से हटाएं, भजन-अभ्यास के समय को बहुत कीमती समझें।

आप जब भजन-अभ्यास में बैठते हैं तो मन अपनी किताब खोल लेता है और आपको परेशान करता है लेकिन आप मन की बात न सुनें। भजन-अभ्यास के समय अगर आप पाँच पवित्र शब्दों के सिमरन के अलावा कुछ और सोच रहे हैं तो आप अपने गुरु का अपमान कर रहे हैं। भजन-अभ्यास करते समय हमारा ध्यान दोनों आँखों के बीच होना चाहिए जहाँ शब्द रूप गुरु बैठा है।

अगर हम भजन-अभ्यास के समय दुनियावी चीज़ों के बारे में सोच रहे हैं तो हम अपने गुरु का आदर नहीं कर रहे। सिमरन करते समय कुछ और सोचना ऐसा है जैसा कि हम पूजनीय पुरुष के सामने कोई बुरी बात कर रहे हैं।

अपनी दोनों आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रेमी सुनों प्रेम की बात

(स्वामी जी महाराज की बानी) दिल्ली

प्रभु प्रेम है। हम जब तक प्रेम रूप नहीं हो जाते या अपने अंदर इतना प्रेम पैदा नहीं कर लेते जितना प्रभु है तब तक हम प्रभु से नहीं मिल सकते बेशक हम अपने आपको कितना भी काबिल क्यों न समझते हों अगर हम प्रेम बन जाते हैं तो ऐसी कोई शक्ति नहीं जो आत्मा को पकड़कर नीचे की इन्द्रियों या निचले हिस्से में रख सकें वह जरूर उड़ारी मारेगी, उस प्रेम के पास पहुँच जाएगी। हर वस्तु अपने असल की तरफ जाती है। प्रभु प्रेम है और हमारी आत्मा भी इसकी अंश है यह भी अपने आप ही उसकी तरफ उड़ारी मारेगी और अपने देश पहुँच जाएगी। सन्तमत किसी के अवगुण बयान नहीं करता। सन्त कहते हैं:

मंदा जाणें आपको अवर भला संसार।

सन्तमत में अपने आपको सेवादार या छोटा बयान किया गया है। आज तक सन्तों ने इस संसार में आकर यह नहीं कहा कि हम कुछ हैं। महाराज सावन सिंह जी हमें यह जरूर कहते गए कि आप हमें अपना भाई, दोस्त, बुजुर्ग समझें लेकिन आप अंदर जाकर हमें जो चाहे कह सकते हैं। अंदर जाने का मतलब क्या है और सन्त इस चीज पर क्यों जोर देते हैं?

मैं जब बाहर गया तो कई लोगों ने मुझसे सवाल किए कि जब सन्तों ने हमें ले जाना है, सन्तों ने हमारी जिम्मेवारी ली है कि हम आपको जरूर प्रभु के दरबार ले जाएंगे तो फिर इतना भजन-अभ्यास क्यों करवाया जाता है? इसका एक ही जवाब है कि हमारे

अंदर हमारा दुश्मन मन बैठा है जो किसी भी समय हमें धोखा दे सकता है। बाहर जितने भी दुश्मन किसी मुल्क पर चढ़ाई करते हैं बाहरी तौर पर उस मुल्क की फौज उनका मुकाबला करती है और वह कामयाब होती है लेकिन जब दुश्मन ही किसी के अंदर बैठा हो आप उसका मुकाबला किस तरह कर सकते हैं?

जिस तरह सिपाहियों को तैयार करने के लिए जरनल लोग ट्रेनिंग देते हैं सिपाहियों को हिदायत के मुताबिक सब कुछ करना पड़ता है अगर सिपाही जनरल की हिदायत के मुताबिक किसी और तरफ जाता है तो वह खता खाता है। इसी तरह सन्त-सतगुरु भी एक जनरल की तरह उस शत्रु से लड़ने के लिए हमसे ट्रेनिंग करवाते हैं। उस दुश्मन का पता बताते हैं कि आपके अंदर एक ऐसा दुश्मन है जो बहुत हठीला है जो जल्दी से नहीं मानता। जिस तरह सिपाही को राईफल चलाने का ज्ञान करवाया जाता है उसे राईफल के साथ लेस किया जाता है और हथियारो की ट्रेनिंग दी जाती है उसी तरह सन्त हमें शब्द-धुन के साथ लेस कर देते हैं।

इसी तरह सन्तमत में बताया जाता है कि आपका सबसे बड़ा शत्रु मन है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और ईर्ष्या ये सब मन की फौजें हैं। मन खुद तो किसी समय सामने आता है लेकिन पहले यह अपनी इन फौजों को आगे किए रखता है। जब हम इस मन शत्रु के ऊपर फतह प्राप्त कर लेते हैं तब हमारी आत्मा इससे आजाद होकर अंदर जाती है।

जब हम एक बार अपनी आँखों से देख लेते हैं कि यह घोड़ा है फिर चाहे सारी दुनिया यह कहे कि यह गधा है तो हम कभी भी नहीं मानेंगे क्योंकि हमने अपनी आँखों से देख लिया है। भजन-अभ्यास का मतलब यही है कि हम मन के धोखे में न आएं।

हमें यह यकीन हो जाए कि सन्त जो कुछ बताते हैं वह सही है, सन्तमत कहने-सुनने का मत नहीं। सन्तमत आओ, करो और देखो का मत है लेकिन हम कहते हैं कि हम कर नहीं सकते। जो आदमी यह शिकायत करता है कि मैं यह नहीं कर सकता वह सवाल करने का भी हकदार नहीं है। जो आदमी करे वह जो चाहे सवाल करे। सन्तों को इस चीज का पता है कि जब अंदर जाएंगे तो सवाल का कोई मतलब ही नहीं।

सन्त कहते हैं कि जब आप अंदर जाकर देखेंगे तब सवाल का क्या मतलब? आप करके देखें आपको उसका जवाब मिलेगा, जवाब देने वाला आपके अंदर है बाहर नहीं। अंदर का जवाब तसल्ली वाला है, बाहर सन्त पत्रों और इंटरव्यू द्वारा हर बात का जवाब देते हैं तसल्ली करवाते हैं लेकिन अंदर हमारा मन बैठा है यह कभी बाहर की बातों पर तसल्ली करता है कभी नहीं भी करता।

सिक्ख इतिहास इस बात का गवाह है कि गंगू ब्राह्मण बाईस साल तक गुरु गोबिंद सिंह जी के पास रहा, उसने सतसंग सुने। वह गुरु गोबिंद सिंह जी का खाना तैयार करता था। उससे कितना बुरा कर्म हुआ। गुरु गोबिंद सिंह जी के दो बच्चों को नीवों में चिनवाने का और उनकी माता गुजरी को पकड़वाने का जिम्मेवार भी वही था, उसके मन ने उसे धोखा दे दिया। माता गुजरी ने बुर्ज से गिरकर अपने प्राण त्यागे थे।

जो शख्स इतने साल सन्तों के पास रह जाए उनका अन्न-पानी खा ले फिर भी वह उस सन्त के मुत्तलिक इतना बुरा कर्म कर बैठे। यह कर्म उसने मन के आधीन होकर किया क्योंकि मन ने उसके अंदर लालच पैदा कर दिया कि इनके पास कुछ पैसे हैं इन्हें पकड़वाया जाए। लालच पैदा हुआ तो तृष्णा बढ़ी तृष्णा को पूरा

करने के लिए इंसान को कोई न कोई कर्म तो करना ही पड़ता है। उससे यह ऐसा कर्म हुआ जो सदा के लिए इतिहास में लिखा गया कि इसने यह बुरा कर्म किया है।

सन्त प्रभु प्रेम का संदेश लेकर आते हैं, उस आत्मा को संदेश देते हैं जो प्यार से मिलना चाहती है अपने अंदर प्यार पैदा करना चाहती है। हम प्यार को भूले हुए हैं। जब दस आदमी इकट्ठे होकर भक्ति ही नहीं कर सकते तो किसलिए इकट्ठे होंगे?

हिन्दु चाहते हैं कि सारी कौम हमारी हो, मुसलमान चाहते हैं कि सारी कौम हमारी हो, सिक्ख चाहते हैं कि सारे सिक्ख ही सिक्ख हों लेकिन महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सारे हिन्दु हो जाएं तो हिन्दुओं को क्या मिल जाएगा? अगर मुसलमानों की सोचनी के मुताबिक सारी दुनिया मुसलमान हो जाए तो मुसलमानों को क्या मिल जाएगा क्या उनकी आत्मा को शान्ति आ जाएगी? अगर किसी कौम की गिनती ज्यादा है तो आत्मा को शान्ति नहीं आती।''

इसी तरह सन्तमत में आकर भी हमारे अंदर यह इच्छा पैदा हो जाती है कि हमारी पार्टी के लोग ज्यादा हों हम एक-दूसरे की बुराई क्यों सोचते हैं? हमारे दिल में यह है कि सब हमारे सन्त के पास ही जाएं दूसरे के पास न जाएं। आप सोचकर देख लें! सन्तों का क्या मिशन होता है?

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर यह कहानी सुनाया करते थे कि ब्यास दरिया के किनारे एक सन्त रहता था। लोगों ने उसकी बहुत करामातें सुन रखी थी। उस सन्त की करामाते सुनकर शाह सिकंदर भी उस सन्त के पास गया और कहने लगा, ''महात्मा

जी! कोई सेवा बताएं?'' उस महात्मा ने कोई खास मकान नहीं बनाए थे वह एक झोंपड़ी में ही गुजर करता था। महात्मा ने शाह सिकंदर से कहा, ''मेरी सेवा यही है कि तेरे राज्य का कोई आदमी मेरे पास न आए क्योंकि जब ये लोग आते हैं तो मेरे भजन-सिमरन में विघ्न पड़ता है, उनके साथ बात करनी पड़ती है।'' सिकंदर ने कहा, ''मैं आपकी यह सेवा तो नहीं कर सकता।'' महात्मा कभी यह नहीं चाहता कि मेरे पास ज्यादा पब्लिक आए।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''ज्यादा इकट्ठ का यह सबूत नहीं कि यह पूरा महात्मा है। हमारे ऊपर इसका असर जरूर हो जाता है। सन्तमत का मतलब करो और देखो है अगर किसी मत में ज्यादा सतसंगी हों तो क्या उनकी आत्मा को शान्ति आ जाती है?''

मेरे अपने देखने की बात है कि हमारे गंगानगर में महाराज सावन सिंह जी के गिनती के दस-ग्यारह ही सतसंगी थे। वे कोई भी बात करते तो लोग कहते कि ये ब्यास जाते हैं ये झूठ नहीं बोलते। अदालत भी इस बात को मानती थी कि ये ब्यास जाते हैं ये महाराज सावन सिंह जी के सिक्ख हैं झूठ नहीं बोलते। आज गाँवों के गाँव ब्यास के सतसंगी हैं, वे बेचारे आपस में लड़ पड़ते हैं गुस्सा भी हो जाते हैं; आज लोगों में वह श्रद्धा नहीं रही।

इसी तरह गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़कर देखें! फर्रूखशियर बादशाह ने हुक्म दे दिया कि सिक्खों का नामोनिशान न छोड़ा जाए। सिक्ख काफिरों की शक्ल में जंगलों में अपनी जान बचाते थे। चार-पाँच सौ सिक्खों का जत्था पकड़ा गया। उन्हें पकड़कर बादशाह के सामने पेश किया गया। उनमें एक छोटा बच्चा था उस बच्चे की माता वजीर के घर काम करती थी। उसने वजीर से कहा अगर आप मेरे बच्चे को फाँसी से छुड़वा दें तो बहुत अच्छी बात है।

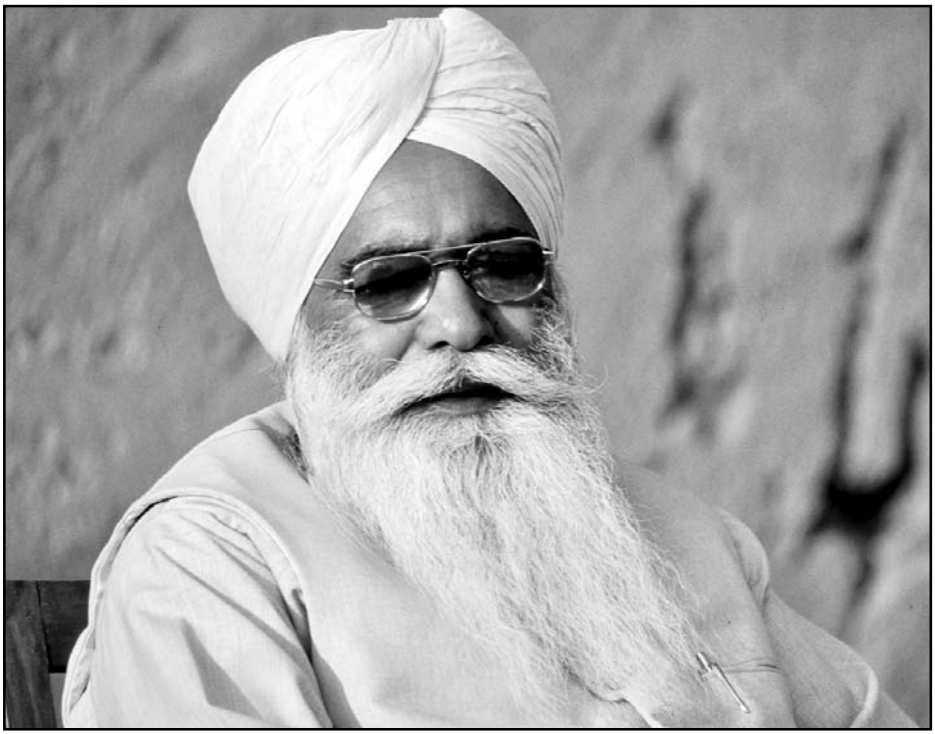

वजीर ने कहा कि कल सिफारिश कर देंगे लेकिन तेरे बच्चे को यह कहना होगा कि मैं सिक्ख नहीं। उसने कहा यह तो मामूली बात है। अगले दिन उस बच्चे की पेशी थी। माता ने अपने लड़के से कहा, ''बेटा! मैंने तेरी सिफारिश कर दी है जब तुझसे पूछा जाए तू यह कहना कि मैं सिक्ख नहीं।'' बच्चा खामोश रहा। जब जल्लाद आया और बच्चे से बयान लेने लगा तो बच्चे ने कहा, ''मेरे पिता सिक्ख थे, मैं भी सिक्ख हूँ। जल्लादों! पहले मुझे कत्ल करो ताकि मेरी माता का कष्ट जल्दी दूर हो जाए।'' यह एक प्रेम की सच्चाई थी।

आप महाराज सावन सिंह जी के सतसंग पढ़कर देख लें! आप निन्दा को बहुत बुरा कहते थे। सन्तों का संदेश प्रेम का है। महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''हम किसी को

दूसरी तरफ प्रेरित करने के लिए निन्दा करते हैं। निन्दा न मीठी है न कड़वी है न कसैली है हर इन्द्री से कोई न कोई असर मिलता है लेकिन निन्दा से क्या मिलता है?''

जब स्वामी जी महाराज बुजुर्ग हो गए तो उनके सेवक उन्हें चारपाई पर उठाकर बाहर की हवा लेने के लिए लेकर जाते थे। उनके विरोधी ताना मारते, ''राम नाम सत्य है।'' आप खामोश होकर सुन लेते। सन्त हमेशा ही चुप करके अपनी जीत प्राप्त करते आए हैं। सन्त कभी किसी की नुक्ताचीनी में विश्वास नहीं करते। आप प्रेमियों के लिए संदेश देते हैंः

प्रेमी सुनो प्रेम की बात। प्रेमी सुनो प्रेम की बात।।
सेवा करो प्रेम से गुरु की। और दर्शन पर बल बल जात।।

आप कहते हैं, ''गुरु आपको जो रास्ता बताता है आप वह करें, वही उसकी सेवा है। गुरु सबसे पहले हमें कहता है कि आप भजन-सिमरन करें यही मेरी सेवा है। सन्त तन की, मन की और धन की सेवा बताते हैं लेकिन सबसे ऊँची और सुच्ची सेवा सुरत शब्द का अभ्यास है।''

गुरु की सेवा प्यार से करें उसे बोझ न समझें क्योंकि जब हम अभ्यास के लिए बैठते हैं तो मन हमें आँखे बंद नहीं करने देता। इस बैठक में जो आदमी बैठे थे उन्हें पता ही है कि मन किस तरह जबरदस्ती आँखें खोल देता है। मैंने उन्हें इशारे से बताया था कि कम से कम आँखें तो बंद कर लें लेकिन जिन प्रेमियों को घर में बैठने की आदत बनी हुई है उन्हें पता ही नहीं लगा कि कब एक घंटा पूरा हो गया। अगर हम भजन को बोझ समझेंगे तो हमारे गोडे-गिट्टे और कमर भी दुखेगी। प्रेम में कोई बोझ नहीं होता।

जब कभी हमें गुरु देखने को मिल जाएं तो आप उस समय अपने कर्मों पर बलिहार जाएं कि हमारे कर्म बहुत अच्छे हैं हमारा भाग्य बहुत अच्छा है जो हमें गुरु की सोहबत-संगत में बैठने का मौका मिला। गुरु नानक साहब कहते हैं:

परसन परस भए साधु जन, जन हर भगवान दखीजे, साधु साध साध जन नीके ।।

साधु बनना कोई आसान बात नहीं, साधना करके साधु बनता है। आत्मिक ज्ञान की लगन शहद से भी मीठी होती है लेकिन आत्मिक ज्ञान को अपने अंदर ठहराए रखना बहुत कठिन है। जिंदगी में बहुत कुछ गुजरता है कई बार मन जोश में आकर बहुत कुछ कर देता है कि मैं भी हूँ कुछ। साधु को देखना प्रभु को देखना है साधु के साथ बात करना प्रभु के साथ बात करना है इसलिए साधु पर बलिहार जाते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

मैं देख देख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा।

सतगुरु को देख-देखकर मेरा मन नहीं भरता। धन्य है वह भगवान जब भी जीवों पर दया-मेहर करता है अपना तन धारण करके संसार में आता है। यह जीवों के ऊपर बहुत भारी दया होती है।

बचन पियारे गुरु के ऐसे। जस माता सुत तोतरि बात।।

आप कहते हैं कि आप ऐसा न सोचें कि यह पढ़ा-लिखा है या अनपढ़ है। हम पढ़े-लिखें हैं हम इस बात को अच्छे ढ़ंग से पेश कर सकते हैं या यह कहानी तो हमने पहले भी सुनी थी।

स्वामी जी महाराज एक बड़ी अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि गुरु के वचन इस तरह प्यारे लगने चाहिए जैसे माता अपने बच्चे की तोतली बातें सुनकर खुश होती है। चाहे बच्चा गाली भी निकाले माता को प्यारा लगता है। बच्चा बोलना नहीं जानता लेकिन

माता के अंदर प्यार का एक ऐसा जज्बा है कि उसे अपने बच्चे की भोली-भाली बातें प्यारी लगती है। कई बार बच्चा माता को गाली भी निकाल देता है लेकिन माता को गाली भी प्यारी लगती है वह कहती है फिर बोल। बच्चा फिर से वही बोल देता है, उसमें प्यार ही काम करता है। प्यार में माता को वह गाली नहीं लगती बल्कि उसमें उसे और प्यार आता है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

जिन अंदर प्रीत प्रेम की, ज्यों बोलण तिवें सुहन।

सवाल प्रेम का है। गुरु के वचन इस तरह प्यारे लगें जिस तरह माता को अपने बेटे की भोली-भाली बातें प्यारी लगती हैं।

जस कामी को कामिन प्यारी। अस गुरुमुख को गुरु का गात।।

आमतौर पर हम दुनियादार जिन चीजों में से गुजरते हैं, सन्तों ने भी हमें वही मिसालें दी हैं। नामदेव जी कहते हैंः

कामी को जस कामिन प्यारी, ऐसी नामे प्रीत मुरारी।

जिस तरह कामी आदमी का अपनी पत्नी के साथ प्यार है वह कहता है कि मुझे उस प्रभु के साथ इतना ही प्यार है। काम का वेग तत्काल का पागलपन होता है। इंसान जिस औरत के साथ नफरत करता है उस समय वह उस औरत के साथ काम चेष्टा के लिए कितनी मौहब्बत करता है, वह उस समय औरत का कोई भी ऐब नहीं देखता। काम के वश होकर यह नहीं देखता कि इसका कैसा रंग है यह जवान है या बूढ़ी है? इसी तरह अगर हमारी आत्मा प्रेम के वश हो जाए तो प्रेम की बंधी हुई प्रभु की तरफ ही जाती है।

खाते पीते चलते फिरते। सोवत जागत बिसर न जात।।

आप कहते हैं दिल में गुरु की इतनी याद होनी चाहिए कि खाना खाते समय, पानी पीते समय, सोते समय, सफर करते

समय गुरु को याद करें। किसी के साथ बात भी करते हैं फिर भी गुरु को ही याद करें। जब साँस ऊपर जाता है गुरु का सिमरन करें और जब साँस नीचे आता है तब भी गुरु का सिमरन चलना चाहिए। गुरु नानक साहब कहते हैं:

ईक खिन्न बिसरे स्वामी जानो बरस पचासा।

अगर हम गुरु को एक सैकिंड भी बिसर जाते हैं तो पचास साल जितना फर्क पड़ जाता है। गुरु साहब तो यहाँ तक लिखते हैं:

ईक तिल प्यारा विसरे ते भक्त कनेही होय।

अगर हम गुरु को एक सैकिंड भी बिसर जाते हैं तो भक्ति में दरार पड़ जाती है लेकिन हमारी यह हालत है कि हम कई-कई घंटे सिमरन छोड़े रखते हैं। कई-कई दिन भजन पर नहीं बैठते भजन से गैरहाजिर रहते हैं। हर इंसान का फर्ज बनता है कि वह रोजाना अपनी जिंदगी का लेखा-जोखा करे।

हुजूर महाराज ने डायरी रखने का उपदेश दिया था कि आप अपना लेखा-जोखा करें। हमने रोजाना डायरी को भरना तो शुरू कर दिया लेकिन आज जो ऐब हो गया हम अगले दिन भी वही ऐब लिख देते हैं कि महीने में यह गलती इतनी बार हुई। जब हम अपने हाथ से हुई गलती को एक बार लिख लेते हैं तो वही गलती दूसरी बार क्यों करें?

मैं आमतौर पर गुरु गोबिंद सिंह जी की मिसाल दिया करता हूँ कि आप एक गांव में गए। आपने वहाँ के लोगों से कहा कि आप लोग शराब-मीट और चोरी छोड़ दें। उन लोगों ने कहा कि हम यह छोड़ नहीं सकते। हिन्दुस्तान में वह जमाना ज्यादा पढ़ाई-लिखाई का नहीं था। गुरु साहब ने कहा कि जब आपसे पाप हो जाए तो

आप एक कंकड़ उठाकर उस तरफ रख दिया करें, जब उन लोगों ने कुछ दिन इसी तरह किया तो कंकड़ों के ढ़ेर लगने शुरू हो गए। उन लोगों ने सोचा कि हम यह तो बड़ा जुल्म कर रहे हैं हमें किस तरह माफी मिलेगी? उन लोगों ने गुनाह करने छोड़ दिए।

जब फिर गुरु गोबिंद सिंह जी उस गाँव में गए तो आपने उन लोगों से पूछा, ''क्यों भई! लेखा-जोखा किया?'' उन लोगों ने कहा कि हमने कुछ दिन तो लेखा-जोखा किया था लेकिन जब कंकड़ों के बड़े-बड़े ढ़ेर लगने शुरू हो गए तो हमें डर लगा और हमने पाप करने ही छोड़ दिए।

हर इंसान का धर्म है कि वह अपनी जिंदगी का लेखा-जोखा करे। जब तनख्वाह आती है तो हम घर के कारोबार का लेखा-जोखा करते हैं। इसी तरह हमने अपनी जिंदगी का लेखा-जोखा करना है। खाते-पीते, सोते-जागते उसे बिसरें नहीं। भजन में गैरहाजिरी न करें अगर हम एक दिन भजन से गैरहाजिर रहेंगे तो हमारा दुश्मन मन हमारे अंदर ही बैठा है यह आपको अगले दिन भी यही सलाह देगा। कबीर साहब कहते हैं:

कल करन्ता अब कर अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवई जब सिर पर आया काल।।

जो काम कल करना है वह आज ही कर लेना चाहिए। मन की आदत है कि यह टालता चला जाता है इसलिए सोते-जागते, उठते-बैठते उसे न बिसरें। कोई मूल्य नहीं लगता लोगों से बात करते हुए भी मन को सिमरन में लगाए रखें।

खटकत रहे भाल ज्यों हियरे। दरदी के ज्यों दर्द समात।।

आप कहते हैं कि इस तरह की लगन हो जिस तरह बिमार का ख्याल अपने-आप ही दर्द की तरफ चला जाता है। वह प्रभु के

आगे फरियाद करता है कि हे प्रभु! तू मुझ पर मेहर कर, मुझ पर दया कर। कई बार अपने शरीर को भी ऐसा रोग लग जाता है जिसमें न सोते हुए चैन है न जागते हुए चैन है। हम डाक्टरों के पास जाकर मिन्नतें-खुशामदें करते हैं; अपने पीरों-फकीरों के आगे मिन्नतें करते हैं कि हमें ठीक करें। सारे परिवार का ख्याल भी बीमार की तरफ ही लगा रहता है। जिस तरह बीमार का ख्याल उस तरफ लगा रहता है उसी तरह आपका ख्याल भी सिमरन की तरफ लगा रहना चाहिए।

ऐसी लगन गुरु संग जां की। वह गुरुमुख परमारथ पात।।

आप कहते हैं जिस आदमी की ऐसी लगन बन जाती है कि भजन-अभ्यास पहले दुनिया का काम बाद में। गुरु का हुक्म मानने से मन में सवाल ही पैदा नहीं होता कि आज तक इस दरबार से कोई खाली गया हो।

मैं आमतौर पर वायदे से कहा करता हूँ कि आज तक कोई ऐसी मिसाल नहीं मिली कि जिस आदमी ने भजन-अभ्यास किया हो उसे गुरु प्रभु की तरफ से कोई दात न मिली हो। गुरु जरूर झोली भरकर भेजता है क्योंकि वह देने के लिए ही आता है।

महाराज जी कहा करते थे, ''देने वाले का क्या कसूर है? सवाल तो लेने वाले का है। हमने यह सोचना है कि हम क्या माँग रहे हैं? हम दुनिया की चीजें मांगते हैं वे हमें मिल जाती हैं।''

सतगुरु दाता सबना बथूका।

सतगुरु के पास सब कुछ है लेकिन महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर आपने अलमारी बनवानी है, घर का कारोबार करवाना है आप बढ़ई के पास कितने चक्कर लगाएंगे अगर आप

बढ़ई के साथ प्यार करके उसे अपने घर ले आएं तो उससे जो कहेंगे वह अपने आप ही बनाता जाएगा।

इसी तरह अगर हम अपने अंदर गुरु को प्रकट कर लें तो हमारी जो भी जरूरत होगी गुरु अपने आप ही उसे पूरी करेगा। गुरु वही करेगा जो शिष्य के फायदे का होगा। कई बार हम अभ्यास नहीं करते तो जब कोई कष्ट आता है तब मन बगावत कर देता है कि मैंने तो नाम लिया हुआ है मुझे बीमारी क्यों आई या मेरा यह नुकसान क्यों हुआ? ये सारे मन के भुलेखे हैं।

आप देखें! गुरुमुखों के ऊपर कितने-कितने कष्ट आए। भाई मतिदास को दिल्ली में आरे से चीरने लगे तो उससे कहा कि तू जिसके पीछे लगा है वह तेरे सामने पिंजरे में बैठा है। जब वह मौत से बच नहीं सकता तो तू कैसे बचेगा? यही अच्छा होगा कि तू इसका ख्याल छोड़कर हमारा धर्म कबूल कर ले तुझे बख्शा जाएगा।

मतिदास ने हँसकर कहा, ''आपको ज्ञान नहीं कि यह क्या है? अगर आप मुझ पर दया करना चाहते हैं तो मेरा मुँह मेरे गुरु की तरफ करके पहले मुझे चीर दें, मैं आपका शुक्रगुजार होऊंगा ताकि मैं अंत समय में भी इन्हें प्रणाम करता रहूँ।'' आप सोचकर देख लें! गुरु सामने बैठा हो सिक्ख को आरे से चीरा जाए फिर भी वह कहे कि आपको ज्ञान नहीं। यह मतिदास की श्रद्धा और विश्वास था उसने अंदर अपने गुरु को देखा था कि गुरु क्या है?

जब लग गुरु प्यारे नहिं ऐसे। तब लग हिरसी जानों जात।।

अब कहते हैं कि जब तक आपके अंदर इतना प्यार नहीं आता कि दीन-ईमान सब कुछ ही गुरु है उतनी देर हम हिरस के वस हैं।

दुनियादारी के नाते हम बैठते भी हैं प्यार भी करते हैं लेकिन अभी तक हमारा मन उस तरफ नहीं लगा।

मनमुख फिरे किसी का नाहीं। कहो क्योंकर परमारथ पात।।

आप कहते हैं कि मनमुख मन के आधीन है, मनमुख किसी का नहीं। जिस आदमी ने अपनी आत्मा पर दया नहीं की वह किसी पर क्या दया कर सकता है? स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव की दया पा लो, चौरासी का फेर बचा लो।

भजन करना, नेक बनना हम किसी के ऊपर अहसान नहीं करते यह तो हम अपने पर दया कर रहे होते हैं। जो आदमी अपनी आत्मा पर, अपने जीव पर दया नहीं करता वह किसी पर क्या दया कर सकता है? मनमुख किसी का नहीं उसे परमार्थ कहाँ से मिले? क्योंकि परमार्थ कीमत चुकाने या चालाकी से नहीं मिलता।

भोले लोग बेचारे रह जाते जे कर चतुर ही ओहनूं भरमा लेंदे।

महाराज सावन कहा करते थे कि परमार्थ में एम.ए.पास को भी पाँच साल के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। नामदेव जी कहते हैंः

भोले भाए मिले रघुराय।

राधास्वामी कहत सुनाई। अब सतगुरु का पकड़ो हाथ।।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में हमें प्रेम का संदेश दिया कि प्रभु प्यार है। हमें भी अपने अंदर प्रभु का प्यार पैदा करना चाहिए क्योंकि प्रभु अंदर बैठा है वह कभी भी हमारे धोखे में नहीं आ सकता। हम बाहर दुनिया को धोखा दे सकते हैं अपने आपको भी धोखा दे सकते हैं लेकिन वह परमात्मा कभी किसी के धोखे में नहीं आ सकता। प्रभु गुड़ की डली नहीं जिसे कोई भी उठाकर

अपने मुँह में डाल लें। इसमें अपना आप न्यौछावर करना पड़ता है अगर मिलावट है तो पर्दा नहीं खुलता।

इसलिए आपने बड़े प्यार से कहा है कि आपने चलते-फिरते, उठते-बैठते अपना मन सिमरन में लगाना है। आप जब सिमरन में अपना आप लगा देंगे तो मन के ऊपर फतह पा लेंगे। आप हमें प्यार से समझाते हैं कि हमें इस संसार में सफर करते हुए बहुत वक्त हो गया है, कईयो को नाम लिए हुए काफी वक्त हो गया है अब तो आप अपनी आत्मा को नौं द्वारों में से निकालकर उस शब्द के साथ जुड़ जाएं आगे पता नहीं कैसा वक्त आना है?

गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना से पूछा कि तुम्हें जिंदगी पर कितना भरोसा है? मर्दाना ने कहा कि एक कदम उठाया है दूसरे का भरोसा नहीं। मर्दाना ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आप जिंदगी पर कितना विश्वास करते हैं? आपने कहा, ''मर्दाना! सांस ऊपर गया है कह नहीं सकता कि सांस नीचे आएगा या नहीं? ''

हमें इस वक्त से फायदा उठाना चाहिए। मालिक ने तंदरूस्ती बख्शी है हमें इस तंदरूस्ती से फायदा उठाना चाहिए। अगर हम नौजवान होकर भक्ति नहीं करते तो बूढ़े होकर कैसे भक्ति करेंगे? बुढ़ापे में मन और फैल जाएगा, जोड़ो में कई किस्म के दर्द होने लग जाएंगे, मन नहीं टिकता।

इसलिए हमें इस वक्त से पूरा फायदा उठाना चाहिए। स्वामी जी महाराज के कहने के मुताबिक ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करना चाहिए और एक-दूसरे के प्रति प्यार-मौहब्बत रखनी चाहिए।

10 फरवरी 1979

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

07 से 11 सितम्बर 2018

05 से 07 अक्टूबर 2018

02 से 04 नवम्बर 2018

30 नवम्बर और 01 व 02 दिसम्बर 2018